लोकप्रिय भारतीय संगीत का आधुनिक स्वरुप

Neelam Sharma
Music Teacher, K.V. II DMW, Patiala.

संगीत का एक प्रमुख उद्देश्य मनोरंजन है । मूलतः इसी उद्देश्य के लिए कतिपय लोगों के द्वारा संगीत का प्रयोग किया जाता है । लेकिन आज के युग में, जब सब कुछ बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के द्वारा नियंत्रित होने लगा है, मनोरंजन के आयाम और अर्थ भी बदल रहे हैं । प्रस्तुत लेख में इस बात का विश्लेषण किया जाएगा कि क्या आधुनिक लोकप्रिय संगीत में मनोरंजन की क्षमता है अथवा मनोरंजन के नाम पर कुछ और ही परोसा जा रहा है ।

मनोरंजन का अर्थ

सामान्यतः जो वस्तु, दृश्य, स्थिति इत्यादि हमें आकर्षित करे, उससे हमारा कुछ न कुछ मनोरंजन होता है, ऐसा समझा जाता है । मनोरंजन का अर्थ है – मन का रंजन । रंजकता मूलतः सौंदर्यानुभूति पर निर्भर करती है । यही कारण है कि एक ही स्थिति अथवा दृश्य अलग–अलग लोगों पर भिन्न प्रभाव डालते हैं । सौदर्य को ग्रहण करने की क्षमता में भिन्नता के कारण ही गीत किसी को अच्छा लगता है, तो किसी अन्य को आकर्षित नहीं करता है । सौंदर्यानुभूति के लिए यह एक आवश्यक शर्त है कि मनुष्य के मन में कलाओं के प्रति अनुराग हो । संक्षेप में उसमें कला के आस्वाद के प्रति अभिरूचि हो अथवा वह रसिक हो ।

आधुनिक संगीत की यदि बात करें तो इस लेख में लोकप्रिय संगीत पर हमारा ध्यान केंद्रित रहेगा । लोकप्रिय संगीत से हमारा तात्पर्य है, वह संगीत जो टी. वी. के अधिकतर चैनलों पर बजता है । यह कमोबेश बॉलिवुड फिल्मी गीतों पर आधारित होता है । कुछ प्राईवेट एल्बमों का भी लोकप्रिय संगीत में शुमार होता है । लोकप्रिय संगीत के लिए आधुनिक शब्दावली में जो शब्द हैं हम यहां उस का ही प्रयोग करेंगे । वह शब्द है पॉपुलर म्यूजिक या पॉप म्यूजिका।

मनोरंजन के लिए प्रथम शर्त सौदर्य तत्व है, यह सब स्वीकार करते हैं लेकिन सौदर्य की परिभाषा बहुत कठिन है । कहते हैं कि सौदर्य दर्शक की आंखों में निहित होता है । इस विचार को यदि सच मान लिया जाए तो हम कह सकते हैं कि मनोरंजन का संबंध हर व्यक्ति की सौंदर्यानुभूति की क्षमता पर निर्भर करता है । यही कारण है कि कोई संगीत कुछ लोगों को आनंददायक लगता है, तो कुछ अन्य लोगों को नीरस लेकिन कुछ ऐसे मानदंड हैं जो हर संगीत रचना में होने चाहिए । यदि इस बात को इस प्रकार कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी कि सुरूचिपूर्ण संगीत रचनाओं में कुछ विशिष्ट तत्वों का होना आवश्यक होता है । ये तत्व इस प्रकार हैं :–

1. कलात्मक सौन्दर्य : कलात्मक सौंदर्य से तात्पर्य है कि संगीत में कला के आधारभूत नियमों का पालन होना चाहिए । जब बात गीतों की आती है तो इस में साहित्य कला भी सम्मिलित हो जाती है । साहित्य और संगीत के समायोजन से ही काव्यमय गीतों का सृजन होता है । इस लिए गीतों में साहित्य और संगीत दोनों कलाओं का सौंदर्य देखने को मिले तभी वे सुंदर बन पाते हैं।

2. सरसता : कोई भी कला बिना सरसता के आकर्षक नहीं बन पाती । गीतों में भी इस का होना अनिवार्य होता है । गीत जब तक रसपूर्ण नहीं होंगे, वे श्रोताओं को आकर्षित नही कर सकते । सरसता से रंजकता का जन्म होता है और इसी से संगीत में मनोरंजन की शक्ति उत्पन्न होती है ।

3. लयात्मकता : लयात्मकता से तात्पर्य है गीतों की उस शक्ति से जो लोगों को नाचने पर विवश कर देती है । लय हमें संगीत से बॉध देती है । लय को अनुभव करना स्वर को समझने से अधिक सरल है । इस लिए लयात्मकता को संगीत का प्रमुख तत्व माना गया है, विशेष रूप से पॉपुलर में ।

4. मानसिक शांति : संगीत का एक प्रमुख लक्षण यह है कि मन को शांति प्रदान करता है । यही कारण है कि जब हम किसी तनाव में आते हैं, तो अच्छा संगीत सुनने की इच्छा होती है । उच्च कोटि का संगीत हमारे मन को शांति तो प्रदान करता ही है, हमारे मनोकालिन्य का परिष्कार भी करता है ।

उपर्युक्त मानदंडों के अतिरिक्त अन्य उपकरण भी इस सूची में सम्मिलित किये जा सकते हैं, किन्तु ऊपर बताए गये चार मानदंड तो सभी संगीत रचनाओं में होने ही चाहिए ।

इस पार्श्वभूमि मे जब हम आधुनिक पॉपुलर संगीत का दिग्दर्शन करते हैं तो पाते हैं कि आधुनिक लोकप्रिय संगीत केवल अर्थ–तंत्र के सिद्धान्तों को ही जानता और समझता है । मनोरंजन के मूलभूत मानदंडों को तो संगीत रचनाकार तिलांजलि ही दे चुके हैं । आधुनिक गीतों में अश्लीलता, फूहड़पन, लय की उत्तेजना इत्यादि पर ही अधिक बल दिया जाता है । सरसता, रंजकता, मानसिक शांति इत्यादि का तो आधुनिक संगीत में कोई महत्व ही नहीं रह गया है । गीत और संगीत आज कल श्रव्य न रह कर एक दृश्य माध्यम के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं । ऐसे गीतों में नाम मात्र वस्त्र पहने तथा कथित आइटम गर्ल्स कामोत्तेजक संकेतों द्वारा किशोर–किशोरियों को आकर्षित करने का प्रयास करते हैं । यही कोमोत्तेजक समाज में भी प्रतिबिंबित हो रही हैं । कहते हैं कि साहित्य और कलाएं समाज का दर्पण हैं । आज लोकप्रिय संगीत के नाम पर जिस कला का प्रदर्शन किया जा रहा है, वह हमारे समाज को खोखला कर रही है । साहित्य का दीवालियापन आज के गीत लेखकों में सर्वत्र देखने को मिल जाता है । इस संदर्भ में फिल्म नो वन किल्ड जेसिका का लोकप्रिय गीत आली रे साली रे उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है । ऐसे ही अनेक गीत आज हमारे किशोर–किशोरियों के अधरों पर थिरकते हैं और भी थिरकने की प्रेरणा देते हैं । शीला की

जवानी तीस मार खॉ, कैरेक्टर ढीला है रेडी, मुन्नी बदनाम हुई दबंग आदि गीतों को सुनकर लगता है मानो संगीत का लक्षय मनोरंजन नहीं कामोत्तेजन है। सस्ते मनोरंजन का ये फारमुला आज हर संगीत एलबम को प्रभावित कर रहा है । यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि हम काम सेक्स के महत्व से इन्कार नहीं कर रहे और न ही उसकी आवश्यकता से, किन्तु सार्वजनिक रूप से लोगों को सैक्स की उत्तेजना में बॉधना कहां तक उचित है।

गीत संगीत का माध्यम ध्वनि होना चाहिए न कि दृश्य। गीतों का आनंद स्वर लहरियों में है न कि मनमोहक अर्धनग्न नर्तकियों में । गीत आकर्षक संगीत और उत्तम साहित्य का सम्मिश्रण है, न कि कानफाडू संगीत और भावशून्य नृत्य का। इसलिए, गीतों को चिताकर्षक स्वरलहरियों से अलंकृत किया जाना चाहिए, प्रांजल भावों से सींचा जाना चाहिए, मर्मस्पर्शी साहित्यिक रचनाओं के बीज बो कर उससे विकसित फूलों से गीत को सजाना चाहिए। तब कहीं गीत सौंदर्यानुपूरित हो पाता है।

जहां साहित्य के फूल न खिलें, वायु में चिताकर्षक स्वरलहरियां न गूंजें, अपनी संस्कृति को भूल कर किसी और संसार से धुनें चुराने का प्रयास हो, उस जगह न गीत रह सकता है और न ही संगीत। आज हमारे देश में पाश्चात्य का जो अंधानुकरण हो रहा है, वह संभवतः हमारी संस्कृति को ही नष्ट कर देगा। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम इस बात पर विचार करें कि उत्तम संगीत और लोकप्रिय गीतों के नाम पर आज जो कुछ परोसा जा रहा है, उस का आधुनिक भारतीय समाज पर क्या असर हो रहा है । हमारी दृष्टि में आज का लोकप्रिय संगीत समाज को उचित एवं वांछित मनोरंजन नहीं दे पा रहा है और इसमें आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE